जनाब फ़ातिमा (स:अ) की वफ़ात

by Nuzhat Rizvi on Tuesday, April 24, 2012 at 8:08pm ·

हज़रात पैगम्बर जनाबे रसूले खुदा (स.अ.) के बाद जनाबे फातमा ज़हरा के घर वालो पर जुल्म व अत्याचार के पहाड़ टूट पड़े और आप इतना दुखी हुई की अपनी कश्तीए हयात ७५ दिन से जादा न खेब सकी । आपको सर पर पट्टी बंधी रहा करती थी और दिन रात अपने बाबा की याद के गम में रोया करती थी ।हज़रात रासुलेखुदा के मरने के बाद फातमा के घर को आग लगाया । और उनके ऊपर दरवाज़ा गिरा दिया गया ।जिसकी वजहें कर शिकमे मुबारक पर ज़र्ब लगाई थी जिसकी वजहें से जनाबे मोहसिन की शहादत हुई ।

हालत के प्रभावित होकर हजरत फातमा ज़हरा (स.अ) ने अपने वालिद बुजुर्गवार का जो मरसिया कहा उसका एक शेर यह है की :सुब्बत आला मसाएब सुब्बत अल्ल अय्याम सिव लेया लेया ।तर्जुमा :- "बाबा जन आपके बाद मुझ पर ऐसी मुसीबत पड़ी की अगर वह दिनों पर पड़ती तो मिस्ल रात के तारिक हो जाती "

जब जनाबे फातमा के इन्तेकात का समय आया तो न मासूमा को बुखार आया और न दर्दे सर हुआ बल्कि इमामे हसन (अ.) और इमाम हुसैन (अ.) के हाथ पकडे और दोनों को लेकर कब्रे रसूल (स.) पर गयी और कब्र व मिम्बर के बीच दो रकत नमाज़े पढ़ी फिर दोनों को अपने सिने से लगाया और फ़रमाया ऐ मेरे बच्चो तुम दोनों एक साअत अपने बाबा के पास बैठो हजरत अली (अ.ल) इस वक़्त मस्जिद में नमाज़ पढ़े रहे थे फिर वहाँ से घर आए और रसूले खुदा (स.) की चादर उठाई गुसल करके हजरत का बचा हुआ (कफ़न) या कपडे पहने बाद आजान अस्मा (हजरत जाफ़रे तैय्यर की पत्नी) का आवाज़ दी अस्मा न अर्ज़ की बीवी हाज़िर होती हूँ । जनाबे फातमा ने फ़रमाया अस्मा तुम मुझसे अलग न होना ।

में एक साअत इस हुजरे में लोटना चाहती हूँ जब एक साअत गुज़र जाए और में बहार न निकलू तो मुझको तीन आवाज़ देना अगर में जवाब दूँ तो अंदर चली आना वरना समझ लेना की में रसूले खुदा (स.) से मुल्हिक हो चुकी हूँ । बाद आजान रसूले खुदा (स.) की जगह पर खड़ी हुई और दो रकत नामज़ पढ़ी फिर लेट गयी और अपना मुँह चादर से ढाँप लिया बाज़रिवायत में फातमा ज़हरा (स.) ने सजदे में ही वफात पाई ।

अलगरज जब तक एक साअत गुज़रती आसमां न जनाबे फातमा ज़हरा को आवाज़ दी ऐ हसन (अ.) हुसैन (अ.) की माँ -ऐ रसूले खुदा की बेटी - मगर कुछ जवाब न मिला तब असमा उस हुजरे में दाखिल हुई क्या देखती है के वह मासूमा मर चुकी है । असमा ने अपना गनिकल पड़ी हसन व हुसैन (अ.) आ पहुचे । पुछा असमा हमारी अम्मा कहा है अर्ज़ की हुजरे में है रेबान फाड़ लिया । और घर से बाहर ।

शहज़ादे हुज़ूरे में पहुचे तो देखा की मादरे गिरामी मर चुकी है हसन व हुसैन (अ.) रोते पिटते मस्जिद में पहुचे । हजरत अली को खबर दी । आप सदमे से बेहाल हो गए फिर वहां से बहाले परेशां घर पहुचे देखा की

असमा सरहाने बैठी रो रही है । आपने चेहरये अनवर खोला सरहाने एक परचा मिला जिसमें वसीयत लिखी थी मुझे आपने हाथो से गुसल देना हनुत करना , कफ़न पहनना ,रात के वक़्त दफ़न करना और दुश्मनों को मेरे दफ़न की खबर न देना । इसमें यह लिखा था की में तुम्हे खुदा के हवाले करती हूँ और अपनी इन तमाम औलादो (सादात)को सलाम करती हूँ जो क़यामत तक पैदा होंगी जब रात हुई तो हजरत अली (अ.) ने गुसल दिया कफ़न पहनाया नमाज़ पढ़ी जनाज़ा लेकर जन्नातुल्बकी में पहुचे तो एक कब्र से आवाज़ आई और खुदी

जब रात हुई तो हजरत अली (अ.) ने गुसल दिया कफ़न पहनाया नमाज़ पढ़ी जनाज़ा लेकर जन्नातुल्बकी में पहुचे तो एक कब्र से आवाज़ आई और खुदी-खुदाई कब्र दिखाए दे गयी हज़रत अली (अ.) ने उसी कब्र में हजरत फातमा को सुपर्दे खाक के करने के बाद हजरत अली कब्र जनाबे फातमा जहरा के पास बैठ कर इन्तेहा रोए जनाबे फातमा ज़हरा की उम्र वफात के वक़्त सिर्फ १८ साल थी ।दुनिया से सफ़र कर गयी ज़हरा (स.) .....इन्ना लिल्लाहे वईन्ना इलैहे राजेऊन

नुजहत रिज़वी उशरवी